खिलखिलाता हुआ कुछ

श्रीधर करुणानिधि

खिलखिलाता हुआ कुछ

श्रीधर करुणानिधि

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फ़रवरी, 2019

© श्रीधर करुणानिधि

यह कविता संकलन कवि का समकालीन हिन्दी कविता के लौह द्वार पर एक दस्तक है। खिच्चा कवि की ऐसी रचना जो दूध से भरे हुए अन्न के खिच्चे दाने की तरह। ज़ाहिर है दूध से भरे हुए कच्चे दाने की अपनी ख़ुशबू होती है और यह ख़ुशबू दूध के उफान को दिग-दिगंत तक फैलती भी है। इन कविताओं में कोई बाह्य आडंबर नहीं, कोई जार्गन नहीं, विचारों की अनावश्यक आपाधापी भी नहीं, रोमानीयत की अयथार्थ उड़ान भी नहीं। नई ज़मीन पर सधे हुए कदमों के निशान की तरह हैं ये कवितायें।

कवि का न कोई अतिरिक्त आग्रह है और न ही महत्वाकांक्षाओं की कोई भावुकतापूर्ण उड़ान। किसी शिशु की नन्ही खिलखिलाहट की तरह हैं ये कवितायें। इसमें जो निश्छलता होती है और दुनिया को जानने समझने के लिए जो अप्रतिम जिज्ञासा होती है- वे सारी चीज़ें इन कविताओं में संगुंफित हैं साथ ही इस दुनिया को बदले देने का हठ भी है।

सुरेंद्र स्निग्ध

कविता- क्रम

सपना	7
रहस्य	9
जिरह	11
खोना	14
मझधार	17
जिनके नहीं होने से...	19
बड़ी घुमक्कड़ है रात	22
छोटी आँखों का बड़ा जंगल	25
अपने-अपने हिंडोले में	28
खजूर की चिरायँध गंध	31
साबुत उल्का पिंड	33
डर	35
प्यार का जायका	38
उदास हँसी	40
सच	42
शुक्रिया ऐ नींद!	44
इस यात्रा में	46

चाँद से रिश्ता 47

वे राहें 50

पराया दिन 52

वे ही तय करते हैं 53

गुमनामी 55

इन्हीं संकेतों से 57

गीलापन 59

कितनी होती हैं अपनी हँसी में वे खुद 61

नंगे पेड़ों का अभिनय 63

चाँद चिड़िया और भूख 65

तेरे हिस्से का पहाड़ अब उनका 67

मौत के पहले का मौसम 68

मिलो चट्टानी वृक्ष से 70

वधस्थल के भीतर और बाहर 72

तुमसे ज़्यादा... एक चिड़िया 74

सपने आते हैं 76

चिट्ठी 78

कुछ भूल आए हैं 80

तब सोचना 82

छुईमुई 84

आज 86

आखिर में... 90

नदी 92

विकल्पहीन 93

खिलखिलाता हुआ कुछ 97

ताड़ का पेड़ और सितारा 99

उदास दिन को हँसाने की पहल 101

अयाल 103

कहानी और चाँद 105

सौदा 109

कथानक 111

जो दिख रहा है 113

प्यार के दूधिया दाने 115

कतरन 117

दुनिया 118

शहर में भय 119

उस जमीन पर 121

जादू 123

तुम्हारी आसमानी आँखों में 126

ठेकेदार 128

खोट 129

जंगल 130

सपना

एक था सपना

पर किसका हो वह अपना

घर-चौपाल, हाट-बैहार, मेले-ठेले

हर जगह... हर उस जगह

जहाँ मिल जाते दो साथी

बस यही चर्चा रह जाती बाकी

दिन-दिन भर कई लोग ढूँढते

खेतों में

हल जोतते... बीज बोते

भुरभुरी सँवरी हुई मिट्टियों में...

लोग खोजते...

कुदालों से... फावड़ों से

एकान्त पगडंडियों से गुजरते हुए

खोजते गमछे से बंधी चावल की पोटली में